M.A. Sem-III
CC-13, Unit-II

Dr. RANJEET KUMAR
Deptt. of History
H.D. Jain College, Ara.

Topic - असहयोग आंदोलन
(Non Cooperation movement.)

→ अंग्रेजी हुकूमत के अत्याचारों के खिलाफ राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने असयोग आंदोलन की शुरुआत की थी। असहयोग आंदोलन का मुख्य उद्देश्य अंग्रेजी शासन के खिलाफ भारतीय जनता को एकजुट करना था। इस आंदोलन के साथ राष्ट्रवादी भावनाएँ देश के कोने-कोने में पहुँच गई, और इस आंदोलन से देश के हरेक वर्ग के लोग जैसे — कारीगर, छात्र, किसान, शहरी गरीब महिलायें, व्यापारी आदि शामिल हो गए।

खिलाफत के प्रश्न पर 1920 ई० में कांग्रेस के एक विशेष अधिवेशन में गाँधी ने बहिष्कार और असयोग की नीति का एलान किया। खिलाफत कमिटी ने 1 अगस्त, 1920 को आंदोलन प्रारंभ कर दिया। गाँधी ने "कैसरे-हिंद की उपाधि सरकार को लौटा दी। दिसम्बर 1920 के नागपुर कांग्रेस अधिवेशन ने गाँधी के असहयोग आंदोलन के प्रस्ताव को स्वीकृति दे दी।

डॉ० एम.एल जैन के अनुसार असहयोग आंदोलन के दो पक्ष थे — "रचनात्मक एवं विध्वंसात्मक"। पहले वर्ग में स्वदेशी को प्रोत्साहन देने, असहयोग आंदोलन के लिए "तिलक कोष" में एक करोड़ रुपये की राशि एकत्र करने, "स्वयं सेवकों का दल तैयार करने, चरखा एवं कताई-बुनाई का प्रचार करने, राष्ट्रीय विद्यालय स्थापित करने, हिन्दू-मुस्लिम एकता बढ़ाने, अस्पृश्यता का निवारण करने इत्यादि महत्वपूर्ण कार्यों को रखा गया।

→